तिब्बत का मुक्तिसंग्राम
(देनपा-तिब्बत की डायरी उपन्यास के संदर्भ में)

सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे
सहाय्यक अध्यापक, कमला कॉलेज, कोल्हापुर
ई मेल – shrideviwaghamare1993@gmail.com, **भ्रमणध्वनी -** 8378084924

शोध सार :

प्रस्तुत शोध निबंध में चीनके बलात आक्रमण में तिब्बत की स्थिति क्या है?इस पर भाष्य किया है। तिब्बती समाज अत्यंत दयनीय अवस्था को लेखिका नीरजा माधव ने प्रस्तुत किया है।उपन्यास का नायक गेशे जम्पा जो भारत में शरणार्थी बनकर रहता है और सारनाथ में तिब्बती संस्थान का मुख्य अधिकारी है। पहले गेशे जम्पा को अपनी मातृभूमि छोड़ने को मजबूर किया जाता है और फिर चीन द्वारा ऐसी परिस्थितियों निर्माण की जाती है कि अपनी जन्म भूमि तिब्बत वापस जाने के लिए बाध्य होना पड़े। इस उपन्यास के पहले प्रकाशित और बहुचर्चित उपन्यास गेशे जम्पा का अंत जहां होता है वहीं से आगे की घटनाएं इस उपन्यास में दर्शायी गई है।

21वीं सदी तक भूमध्य भागों में साम्राज्यवाद की ताकत कमजोर हो रही थी। साम्राज्यवादी ताकतों के चंगुल से कुछ देश स्वतंत्र हो रहे थे।अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहे थे। इसी समय साम्राज्यवादी चीन के पिंजरे में तिब्बत बंद हो रहा था। साम्राज्यवाद का शिकार बन गया था। उसका तन-मन क्षत-विक्षत हो रहे थे। उसकी हालत पिंजरे में बंद पंछी की तरह दिखाई दे रही थी, लेकिन उसने हार मानी नहीं अपनी मुक्ति की आजादी आज भी जारी है। कुछ कारणों की वजह से आज भी उनका मुक्ति आंदोलन सफल नहीं हो रहा है। यह असफल आंदोलन स्वतंत्र देश को विचार करने के लिए बाध्य करता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से तिब्बत के मुक्ति संग्राम एवं गेशे जम्पा का संघर्ष आदि पर चर्चा की जाएगी।

बीज शब्द : मुक्ति संग्राम, गेशे जम्पा, साम्राज्यवाद, चीन, तिब्बत।

मूल आलेख:

राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित लेखिका डॉ.नीरजा माधव ने हिंदी साहित्य में एक अलग पहचान हासिल की है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज एवं देश के ज्वलंत प्रश्नों को पाठकों के सम्मुख रखकर लेखन कार्य किया है। उनके 13 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। हर एक उपन्यास का विषय अलग दिखाई देता है।'देनपा-तिब्बत की डायरी' यह उपन्यास मुझे पसंद है। तिब्बत भारत का पड़ोसी देश है। भारत और तिब्बत के स्वाभाविक ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक साहित्यिक संबंध प्राचीन काल से रहे हैं। दुनिया में शांति और अहिंसा का प्रतीक के रूप में पड़ोसी तिब्बत जाना जाता है। लेकिन वहां निर्माण अशांति एवं चीन द्वारा किया गया बलात आक्रमण देखकर भारत चिंतित होता है। प्रसिद्ध उपन्यास डायरी शैली में लिखा है, उसके पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'गेशेजम्पा' की अगली कड़ी यह उपन्यास है। 'गेशे जम्पा' उपन्यास का अंत जहाँ का नायक जम्पा अपनी जन्मभूमि तिब्बत जाने के लिए निकलता है, वही इस उपन्यास की शुरुवात जम्पा अपने देश तिब्बत के गाव नड़गरचे पहुंचता है।ये दोनों उपन्यास स्वतंत्र हैं,परंतु दोनों में एक संबंध है। इस उपन्यास के लेखन में संबंधी लेखिका स्वयं लिखती है, इस उपन्यास के लेखन हेतु परम पावन दलाई लामा का प्रोत्साहन मिला है। लेखिका कहती हैं कि- "जनवरी 2011 में मेरे द्वारा ही अनुदित 'गेशे जम्पा' के अंग्रेजी रूपांतरण के परम पावन

जी द्वारा सारनाथ में लोकार्पण के अवसर पर हर बार की भेंट में उनका एक आशीर्वाद भरा आग्रह में 'गेशे जम्पा'का अगला भाग लिखु।"[1]

प्रस्तुत उपन्यास तिब्बत के सामाजिक,राजनीतक,सांस्कृतिक तथा धार्मिक छटपटाहट को व्यक्त करने वाला अनूठा उपन्यास है। जिसमें डायरी के रूप में 9 नवंबर से 1 सितंबर तक यानी 11 महिनों की कथा का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका डॉ. नीरजा माधव ने विस्थापितों की समस्या, बाल विमर्श, नारी जीवन की समस्या हो या चीन की दमन नीति एवं उसपर भारत की चुप्पी साधना, वृद्ध विमर्श जैसी अनेक समस्याओं पर भाष्य किया है। इस उपन्यास के बारे में **चलजित सिंह कुकरेजा** कहते हैं – "देनपा अंत तक अपनी सशक्त शब्द शैली की बदौलत पाठक को बांधे रखती है।"[2] डॉ. नीरजा माधव जी ने 'देनपा- तिब्बत की डायरी' इस उपन्यास के माध्यम से मानवीय अधिकारों के प्रति आवाज उठाई है और वैश्विक चुप्पी तोड़ने का काम किया है। तिब्बत की समस्याओं पर वैश्विक चुप्पी लेखिका को खलती है। यही छुपी आक्रोश में बदलकर उन्हें उपन्यास का लेखन तथ्य के साथ किया है। वह कहती है- "चीन द्वारा कथित 'सांस्कृतिक क्रांति' जिसे मैं 'संहार' का नाम देती हूं।"[3]इससे स्पष्ट होता है कि चीन तिब्बत का संहार करना चाहता है ना कि विकास। उपन्यास का नायक जम्पा चीन में अपनी जन्मभूमीपहुंचता है, उसे वहां पर चीन की दमननीति के तरीके से बुलाया जाता है। वहां पहुंचकर तो वहां उसे लोग संदेह से देखते हैं। वह अपना परिचय देता है कि वह थुपतेन का बेटा जम्पा है, जो बचपन में भारत चला गया था। लेकिन वहां सब अपरिचित है।जम्पा लिखता है–"आज ही पहुंचा हो अपने गांव नड़गरचे में आंखें अपनी किसी भी परिचित को व्याकुलता से ढूंढ रही थी।"[4]कुछ लोग जम्पा की बातें सुनकर पास आने लगे तो कुछ लोग संदेश से देखते हैं। बाद में वह अपने बंद घर की दरवाजे खोलता हैं और अपने अतीत में खो जाता है। उसके माता-पिता ल्हासा के जेल में है। जेल के अत्याचारों से उसकी मां की याददाश जा चुकी है। वह किसी को भी पहचानती नहीं। चीनी सैनिकों द्वारा जेल की नरक यातनाएं उससे सही नहीं वह एक जिन्दा लाश बन जाती हैं। अपनी मां का चित्रण करते हुए लिखते हैं –"एक-एक अपने सारे बच्चों से बिछोह और चीनी यातनाओं से टूट चुकी मां की स्मृति बिलकुल क्षीण हो चुकी थी। उन्हें तो याद ही नहीं था कि पिताजी कहा है?जम्पा कौन है? अपना परिचय देने पर बस वे लगातार सुनी आंखों से मुझे देखती रही थी।"[5]इससे स्पष्ट होता है कि चीनी सैनिकों के आतंक के कारण तिब्बती जनता का जीना मुश्किल हो गया है। तिब्बतियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। वह भारत में शरणार्थी है और अपने देश तिब्बत में गुलाम है, इन दोनों स्थितियों में भी मुक्ति चाहते हैं। लेखिका ने उपन्यास में बंजारा जाति का भी वर्णन किया है, जो अनपढ़ होकर भी तिब्बत की आजादी के लिए काम करते हैं, संगठित रहते हैं। उनके पास हथियार हैं। इसी कारण उन्हें चीनी सैनिक जबरदस्ती घर में बसाना चाहते हैं। जिसके कारण उनका संगठन खत्म हो जाए।

तिब्बत की प्राकृतिक सुषमा अनुपम थी। तिब्बत की धरती रत्नगर्भा थी। उस जगह पर आज भयावह स्थिति निर्माण हो चुकी है। चारों तरफ यंत्र, सेना हथियार दिखाई दे रहे हैं। यह देखकर जम्पा लिखते हैं "स्थिति भयावह! प्रकृति का सीना भेदकर विकास के नाम पर सड़कें, संयंत्र, हथियार, हवाई अड्डे सब कुछ तिब्बत में बलात किया जा रहा है। आम तिब्बती अपनी सुंदर मातृभूमि के साथ वह कृत्य होता देखने के लिए अभिशप्त! आवाज उठाती भी है तो रौंद दी जाती है।"[6] आज तिब्बत की पवित्र भूमि पर परमाणु कचरा दिखाई दे रहा है। जंगलों की कटाई की जा रही है। नदी की गाद भरना शुरू हो चुका है, जो भविष्य में बाढ़ की समस्या लेकर आ सकती है। बहुत सारे लोग मारे जा रहे हैं या बेवजह गायब हो रहे हैं। किसानों की जमीन बलात ली जा रही है। जो किसान आवाज उठाता है उसे तो जेल में बंद कर रहता है और तरह-तरह की यातनाएं दी जाती है। एशिन

चाची बताती है-"फसलों का अधिकांश कई तरह के टैक्सों के रूप में सरकार ले लेती है।हम लोगों के पास बचता क्या है"?[7]

इस प्रकार तिब्बतियों की स्थिति अत्यंत विडंबनापूर्ण है। भारत में तिब्बती शरणार्थी है और अपने देश में गुलाम इन दोनों स्थितियों में वे मुक्ति चाहते हैं। इस मुक्ति हेतु अपनी लड़ाई जारी रख रहे हैं। कुछ लोग वहां रहकर तो कुछ लोग अन्य देशों में रहकर चीन के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं।उपन्यास का नायक जम्पा को चीन से चीनी सैनिकों के द्वारा अपनी नीति के कारण ही अपनी जन्म भूमि छोड़कर ही भारत में पहुंचता है और फिरचीन द्वारा कुछ ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है कि उसे वापस अपने देश तिब्बत जाना पड़ता है। उपन्यास की शुरुआत जम्पा के तिब्बत जाने से होती है और अंत वापस भारत आने के साथ होता है। तिब्बत यात्रा के दौरान घटित घटनाओं एवं अपने अतीत की घटनाओं का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में है। इस प्रकार कथावस्तु में वर्तमान कथा और अतीत की कथा समानांतर चलती है।दोनों कथाओं में तिब्बत की जनता के साथ हो रहे अत्याचार उनकी समस्याओं को अत्यंत सूक्ष्म पद्धति से लेखिका ने दर्शाया है। तिब्बत की ज्यादा से ज्यादा आबादी बेवजह गिरफ्तारियोंसे जूझ रही है। इसके कारण आत्महत्या जैसी घटनाएं आम हो गई है। धार्मिक अधिकारों पर पूरी तरह चीन का आधिपत्य है। उसे के साथ तिब्बत के कुछ भागों में जाने हेतु सरकार से परमिशन लेनी पड़ती है। लूटमार, बलात्कार, नसबंदी, बलात गर्भपात जैसे घटनाएंआम हो गई है। बौद्ध मठों को लूटने और उनकी विरासत को नष्ट करना यह भी अत्याचार का एक मार्ग बन गया है। इन सबको देखकर तिब्बती जनता आक्रमक हो जाती है और वह कहती है – "हमारी जमीनें हमसे छीनी जा रही है और हम ही मारे जा रहे हैं। अब तो एक ही रास्ता बचता है कि हम भी बन्दुक उठालें और लुकछिपकर इन लाल मुंह के बंदरों को जगह-जगह मार गिराए।.....मरना ऐसे भी है, मरना वैसे भी, तो क्यों ना कुछ को मारकर मरें।"[8]

इस मुक्ति की संग्राम में कुछ सकारात्मक पहलू भी है। चीनी जनता का एक वर्ग है जो तिब्बतियों के साथ खड़ा है। मिस्टर जियांग इसके प्रतिनिधिक पात्र हमें दिखाई देते हैं।वह हमेशा तिब्बतियों के पक्ष में खड़े होते हैं। आम चीनी जनता भी नहीं चाहती कि तिब्बतियों का हो विस्थापन हो। विस्थापन की त्रासदी तिब्बतियों को नहीं चीन को बही झेलनी पड़ रही हैं। कुछ चीनी लोगों को अपने मूल स्थान से उठाकर तिब्बत में बसाया जा रहा है। इस घटना के प्रति भी आंदोलन होता हुआ दिखाई देता है। उपन्यास का नायक लिखता है – "जब से तिब्बत लौटा हूं मैं, तब से देख रहा हूं की जन विरोध में वे सभी बातें शामिल हैं, जो किसी भी देशव्यापी आंदोलन में होनी चाहिए। विभिन्न घटनाओं पर रातों-रात हाथ से बने पोस्टरों का उभर कर आ जाना, किसी निर्णय के नाजुक दौर में सामूहिक अवकाश, तोड़फोड़ या जानबूझकर पैदा की जाने वाली रुकावटें आदि यहां की आम जिंदगी का हिस्सा बन चुकी हैं। विदेशी शासन से मुक्ति पाने की इच्छा न केवल बनी हुई है बल्कि पहले से और तीव्र हुई है।"[9]अपने गांव अपनी मातृभूमि में उसे कुछ दोस्त में मिलते हैं, जो तिब्बतियों के संघर्ष के कामना करते हुए दिखाई देते हैं। जम्पा को वह मित्र मंडली आगा करती है चीनी सरकार के षडयंत्र से, यहां के सैनिकों के चंगुल में न फंसे आप। आंदोलन को कमजोर करने के लिए ही यह लोग विदेश में बसे तिब्बती लोगों को वापस बुलाने का कोई ना कोई षड्यंत्र रचते हैं। हम आप जैसे सक्रिय और परम पवन जी के करीबी रहे क्रांतिकारी नेता को खोना नहीं चाहते। मित्र मंडली की सूचना के अनुसार वह आशंका शीघ्र ही सही हो जाती है। झूठे मामले में फंसा करजम्पा को गिरफ्तार करने की कोशिश की जाती है और मजबूर होकर जम्पा अपने पिता के साथ दुर्गम रास्तों का सहारा लेकर भारत के प्रथम गाँव माणा लौट आते हैं। क्योंकि बाहर रहकर वह तिब्बत के लिए प्रयास कर सके। और अपनी मुक्ति के लिए सदैव प्रयासरत रहें।

लेखिका ने उपन्यास की कथावस्तु के निर्माण के पूर्व ही तिब्बत के समाज, संस्कृति, भाषा,इतिहास, भूगोल, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि का गंभीरता के साथ अध्ययन किया हैं। आज हमे दिखाई देता हैं कि तिब्बत में चलनेवाला आंदोलन संभवत:विश्व का ऐसा एकमात्र आंदोलन है जो जीवित है और पूरे विश्व को अपनी और आकर्षित करता है। इस उपन्यास के माध्यम से पूरे विश्व के सामने यह सवाल उपस्थित होता है कि क्या तिब्बत के लिए विश्व समाज की कोई जिम्मेदारी नहीं?क्या इसे विश्व समुदाय तटस्थ होकर देखता रहेगा?लेखिका का यह दावा है कि " भारत तिब्बत के सांस्कृतिक मृत्यु पर चुप नहीं रह सकता।पूरा विश्व मानवाधिकार हनन के प्रश्न पर मौन नहीं रह सकता।ये दोनों ही बिन्दु तिब्बत आंदोलन को बाल प्रदान कहतें है।"[10] इन सभी बातों का निर्णय आनेवाला समय करेगा। तिब्बत का भविष्य बही पूरे विश्व समुदाय तय करेगा। हम सिर्फ अपने सामर्थ्य के अनुसार समर्थन अथवा विरोध कर सकते है। तिब्बत की दयनीय स्थिति हम सभी के लिए चिंता का विषय जरूर बन गई है।

संदर्भसूची

1. नीरजा माधव- देनपा-तिब्बत की डायरी, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली 2018 पृष्ट क्र.7 (थोड़ी सी अपनी बात से)
2. साक्षात्कार पत्रिका -सितम्बर 2018 पृ.क्र.114
3. नीरजा माधव- देनपा-तिब्बत की डायरी, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली 2018 पृष्ट क्र.7 (थोड़ी सी अपनी बात से)
4. वहीँ , पृष्ट क्र9
5. वहीँ, पृष्ट क्र.10
6. वहीँ, पृष्ट क्र.22
7. वहीँ, पृष्ट क्र.49
8. वहीँ, पृष्ट क्र.184
9. वहीँ, पृष्ट क्र.212
10. वहीँ, पृष्ट क्र.211

❑❑❑